भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप: तालमेलपूर्ण संबंधों का निर्माण

*डॉ. दिनोज कु. उपाध्याय और पैट्रिक कुजिएल**

भूमिका

भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE)[1] शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद महत्वपूर्ण राजनीतिक और कार्यनीतिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। इन्होंने नई विश्व व्यवस्था और घरेलू परिवर्तनों, विशेषकर आर्थिक सुधारों की चुनौतियों का उपयुक्त तरीके से सामना करने के लिए अपनी विदेश नीति को पुनः सुव्यवस्थित किया है। शीतयुद्ध के दौरान, भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों के बीच घनिष्ठ साझेदारी के पोषण में द्विध्रुवी व्यवस्था की कार्यनीतिक गतिशीलता, वैचारिक निकटता और संगत वैश्विक दृष्टिकोण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। नई दिल्ली ने सोवियत युग में यूरोप के पूर्वी ब्लॉक के साथ बहुमुखी और ऊर्जावान संबंध साझा किया, जिसका 21वीं सदी में अभाव प्रतीत हो रहा है।

यूरोपीय संघ (ईयू) के एक भाग के रूप में, भारत-यूरोपीय संघ कार्यनीतिक साझेदारी के निर्माण में पूर्वी यूरोपीय देशों की अग्रणी भूमिका नहीं रही है; वे स्वयं ही "कमज़ोर प्रदर्शन"[2] कर रहे हैं। द्विपक्षीय स्तर पर, भारत और पूर्वी यूरोपीय देशों ने पिछले दो दशकों में, अपने-अपने विदेशी एजेंडों पर (एक दूसरे को प्राथमिकता नहीं दिया है, हालांकि, मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के साथ-साथ भारत में (हुए) आर्थिक सुधार सहयोग के अनेक अवसर प्रदान करते हैं। यद्यपि यूरोपीय परिदृश्य में वर्तमान भू-कार्यनीतिक गतिविधियों ने वैश्विक स्तर पर राजनीतिक परिदृश्य को उलझा कर रख दिया है, फिर भी इस मुद्दा सार में यह तर्क दिया गया है कि भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों को विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग करने की (अपनी-अपनी) क्षमताओं का उपयोग करने के लिए अपनी भागीदारी/साझेदारी को फिर से गतिशील बनाने की आवश्यकता है।

भारत-मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) संबंधों के विभिन्न आयाम

भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों ने अपने संबंधों को साझा मूल्यों और पारस्परिक लाभप्रद व्यापार तथा रक्षा भागीदारी के आधार पर पोषित किया। इनके बीच हितों का कोई गंभीर टकराव नहीं था। पूर्व सोवियत संघ के मित्र के रूप में, भारत ने शीतयुद्ध के दौरान मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों के साथ सक्रिय व्यापारिक, रक्षा और सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संपर्क विकसित किए। ए. ओलशेनी ने टिप्पणी की है कि परस्पर आर्थिक सहयोग परिषद (सीएमईए) के सदस्य देशों और भारत के बीच व्यापार तथा आर्थिक सहयोग "संप्रभुता, समानता, परस्पर लाभ और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अहस्तक्षेप का सम्मान" पर आधारित था।"[3] शीतयुद्ध की समाप्ति और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में इसके बाद आए परिवर्तनों का भारत व मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के संबंधों पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा था। हालांकि, सोवियत संघ के विघटन के बाद पारंपरिक सौहार्द और समाजवादी आदर्श कायम नहीं रह सके। साम्यवाद-पश्चात राष्ट्रों ने उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) तथा यूरोपीय संघ में (विलय होने के) व्यवस्थित परिवर्तन तथा क्रमिक एकीकरण के चरण में प्रवेश किया। मध्य और पूर्वी यूरोपीय देशों को भारत सहित विकासशील देशों में कोई कार्यनीतिक तथा आर्थिक हित संबंधी दिलचस्पी नहीं दिखी। राज्य के स्वामित्व वाली कंपनियों के बीच विशेष संबंधों, योजनाबद्ध व्यापार और रुपया समाशोधन करारों पर टिकी बातचीत का अस्तित्व समाप्त हो जाने के कारण वर्ष 1990 के दशक में व्यापार संबंधों और आर्थिक सहयोग में अत्यधिक कमी आ गई। इसके अलावा, मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) का आर्थिक विकास भी ठहर सा गया।

दूसरी ओर, भारत भी अपनी घरेलू राजनीति में आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों का साक्षी बना और आर्थिक सुधार की प्रक्रिया वर्ष 1991 में प्रारंभ हुई। वर्ष 1991 को भारतीय विदेश नीति में एक "नया मोड़"[4] के रूप में माना गया था। नई दिल्ली ने अपने सहयोग का विस्तार पश्चिम के साथ करना चाहा। भारत और यूरोपीय संघ ने द्विपक्षीय स्तर पर व्यापक सहयोग और बहुपक्षीय स्तर पर बेहतर नीति समन्वय को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2004 में कार्यनीतिक सहयोग पर हस्ताक्षर किए। इससे परस्पर सहयोग के संभावित क्षेत्रों का उपयोग करने में सीमित सफलता प्राप्त हुई है। मध्य-पूर्वी यूरोप के 13 देश वर्ष 2004 से ही यूरोपीय संघ में शामिल हो गए हैं, लेकिन इसके कारण नई दिल्ली के साथ संबंधों में सकारात्मक बदलाव नहीं आया है।

हालांकि यूरोपीय संघ-13 के सदस्य देश एकीकृत यूरोपीय शक्ति में अपनी सदस्यता को बल देकर अपना अंतर्राष्ट्रीय स्तर बढ़ाना चाहते हैं, पर भारत गंभीरतापूर्वक यूरोपीय विदेश नीति पर नए सदस्यों के कमज़ोर प्रभाव का आकलन करके जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस के साथ भारत-यूरोपीय संघ संबंधों के बारे में बात करना पसंद करता रहा है। किसी समय भारत-सोवियत संघ की छत्रछाया में संचालित संबंध अब शायद

भारत-यूरोपीय संघ संबंधों की छत्रछाया में विकसित हो रहे हैं।

भारत-मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के राजनीतिक और आर्थिक संपर्क अपेक्षाकृत कम और सीमित रहे हैं। यूरोपीय संघ-13 के सभी सदस्यों के साथ भारत के राजनयिक संबंध हैं और इन सभी के अपने-अपने दूतावास दिल्ली में हैं। मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के अधिकांश देशों के साथ राजनीतिक तंत्र का क्रमश: विस्तार हुआ है और भारत नियमित रूप से (इनके) विदेशी कार्यालयों से परामर्शों में संलग्न रहा है। तथापि, उच्चतम स्तर पर वार्ता नहीं हो पाती है। भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों के बीच राजनीतिक बातचीत काफी निचले स्तर पर और अनियमित रूप से हुआ करती है। यह भी उल्लेखनीय है कि मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों के भारतीय दूतावासों में कर्मचारियों की कमी है।

"भारत-यूरोपीय संघ की कार्यनीतिक भागीदारी" की बुनियाद आर्थिक अनुबंध है।[5] पश्चिमी यूरोप में भारत के अधिकांश व्यापार और निवेश हुआ करते हैं। यह भारतीय छात्रों के साथ-साथ पर्यटकों के लिए भी अधिक आकर्षक गंतव्य स्थल है। यूरोपीय संघ-13 के सभी देशों के साथ भारत का व्यापार वर्ष 2013 में 3.9 अरब यूरो तक पहुँच गया, लेकिन यह यूरोपीय संघ-भारत के कुल व्यापार का केवल 5.4 प्रतिशत ही है, जो वर्ष 2012-13 में 72.7 अरब यूरो था। व्यापार की मात्रा इस क्षेत्र की क्षमता से कम है, जहां यूरोपीय संघ की (कुल) जनसंख्या का पांचवां हिस्सा निवास करता है। यूरोपीय संघ के 28 देशों के व्यापार में इसकी हिस्सेदारी लगभग नौ प्रतिशत है।[6] "पूर्व यूरोप" के विपरित, यूरोपीय संघ-13 के इन देशों को भारत में निवेश और उन्नत प्रौद्योगिकी के प्रभावी स्रोत के रूप में नहीं देखा जाता है। *इंडिया इंक.* की बढ़ती रूचि के बावजूद, इस क्षेत्र को अभी भी पूरे यूरोप में (होनेवाले) भारतीय निवेश का एक छोटा सा हिस्सा ही प्राप्त होता है।[7] यूरोप जानेवाले भारतीय पर्यटकों में से केवल 6.3 प्रतिशत पर्यटक ही मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों में जाते हैं; इसके विपरीत, पश्चिमी यूरोप में 63 प्रतिशत भारतीय पर्यटक जाते हैं।[8] भारत के 50 सबसे बड़े व्यापार भागीदारों में मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) का कोई भी देश (शामिल) नहीं है। (इनमें) पोलैण्ड 65$^{वें}$ स्थान पर है जबकि चेक गणराज्य 66$^{वें}$, माल्टा 70$^{वें}$ और रोमानिया 73$^{वें}$ स्थान पर है। इसी प्रकार, यूरोपीय संघ-13 के सदस्य राष्ट्रों में से किसी के लिए भी भारत व्यापार गंतव्य के रूप में नहीं माना जाता है। उनका आर्थिक संपर्क/व्यापार मुख्य रूप से यूरोपीय संघ के सदस्य राष्ट्रों के साथ होता है। यह क्षेत्र कार्यनीतिक तथा खनिज संसाधनों अथवा उच्च तकनीक वाले उत्पादों का स्रोत नहीं है।

भारत-मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) संबंधों में नए क्षितिज की तलाश

यूरोप में वैश्विक तथा क्षेत्रीय परिदृश्यों और भारत तथा मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) में घरेलू परिदृश्यों में परिवर्तनों ने सहयोग के नए द्वार खोल दिए हैं। भारतीय तथा मध्य-पूर्वी अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक सुधारों ने विकास की अंतर्निहित संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। परिणामस्वरूप, पिछले दो दशकों में

भारत तथा मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों ने उल्लेखनीय आर्थिक उपलब्धि हासिल की है। मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देश वैश्विक अर्थव्यवस्था से और अधिक जुड़ने के लिए एक व्यवस्थित सुधारवादी प्रक्रिया अपना रहे हैं और भारत में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नई सरकार आर्थिक सुधारों के साथ-साथ आर्थिक कूटनीति की अतिसक्रिय नीति का अनुसरण कर रही है। इसने (भारत ने) अपनी विदेश नीति के एजेंडे में यूरोप के महत्व को रेखांकित किया है। संसद के संयुक्त अधिवेशन में अपने अभिभाषण में, भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने कहा, "भारत (भी) यूरोप के साथ अपने व्यापक सहयोग को महत्व देता है।[9] सरकार यूरोपीय संघ के साथ-साथ इसके प्रमुख सदस्य (राष्ट्रों) के साथ प्रमुख क्षेत्रों में प्रगति हासिल करने के लिए ठोस प्रयास करेगी।" अब यह महत्वपूर्ण है कि भारत को यूरोपीय संघ के सबसे बड़े पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों से आगे देखना चाहिए और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों में सहयोग की अंतर्निहित क्षमता का उपयोग करना चाहिए।

राजनीतिक सहयोग

परम्परागत रूप से, मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देश और भारत प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मंचों में समान दृष्टिकोण व्यक्त किया करते थे और अक्सर एक-दूसरे की पहल का समर्थन किया करते थे। जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों पर भी इनकी दिलचस्पी एकसमान है। व्यापक संदर्भ में, लोकतांत्रिक सिद्धांतों के आधार पर भारत तथा मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) दोनों एक बहु-ध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था की संकल्पना करते हैं। दोनों लोकतांत्रिक तरीकों/साधनों और नियम आधारित वैश्विक प्रणाली के माध्यम से शांति और समृद्धि का साझा दृष्टिकोण रखते हैं। इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के लिए, भारत को मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों के साथ क्षेत्रीय दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए और राजनैतिक संपर्क सुदृढ़ करना चाहिए। वैश्विक मंचों जैसेकि यूरोपीय संघ-भारत शिखर सम्मेलन, संयुक्त राष्ट्र महासभा तथा अन्य बहुपक्षीय मंचों पर मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) देशों के नेताओं के साथ अधिकाधिक बैठकें करने से सहयोग बढ़ाने हेतु माहौल तैयार होगा। राजनीतिक नेताओं द्वारा पूर्वी यूरोप की अधिकाधिक यात्रा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार, जलवायु परिवर्तन, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, राजनैतिक रूप से अशांत क्षेत्रों जैसे- अफगानिस्तान में शांति तथा स्थिरता आदि जैसे महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर यूरोपीय संघ-13 के राष्ट्रों से समर्थन प्राप्त कर सकता है।

आर्थिक सहयोग

आर्थिक और व्यावसायिक संपर्क 21वीं सदी में भारत-मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) संबंधों को मजबूत बनाने के प्रमुख कारक होंगे। जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के बीच आर्थिक संपर्क का उपयोग अभी तक नहीं हो पाया है। चूंकि भारत ने पारंपरिक रूप से पश्चिमी यूरोप पर ध्यान

केंद्रित किया है, इसलिए अब यह "नए यूरोप" पर अधिक ध्यान दे सकता है। यह उल्लेखनीय है कि यूरोपीय संघ-13 के सदस्य राष्ट्रों की जनसंख्या कुल मिलाकर 10 करोड़ 50 लाख है, लेकिन वर्ष 2012 में इनका सकल घरेलू उत्पाद कुल मिलाकर 1350 अरब अमरीकी डॉलर था।[10] इस क्षेत्र के व्यापारिक वस्तुओं का कुल निर्यात वर्ष 2012 में 719 अरब अमेरिकी डॉलर था। यूरोपीय संघ में यूरोपीय संघ-13 के राष्ट्रों ने ज्यादा तेजी से वृद्धि हासिल की है। यह क्षेत्र प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का सबसे आकर्षक गंतव्य माना जाता है। यूरोपीय संघ में शामिल होने (के बाद) और संरचनात्मक निधियों के नियमित प्रवाह ने स्थिर राजनीतिक प्रणालियों के निर्माण, बुनियादी सुविधाओं में सुधार सहित मजबूत नियामक व्यवस्था की शुरूआत, पारदर्शिता (लाने) तथा व्यापार अनुकूल वातावरण तैयार करने में इन देशों की सहायता की है। इस क्षेत्र में मौजूद भारतीय कंपनियों का मूल्यांकन है, "यूरोपीय संघ के बाजार की क्रय शक्ति का लाभ मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के बाजारों में रह कर उठाया जा सकता है और निवेश से होने वाले मुनाफे की दर पश्चिमी यूरोप की तुलना में मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) में काफी अधिक है।"[11] भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियां पूर्वी यूरोप में "प्रतिभा और *कैप्टिव्स*" के लिए अवसर देखती हैं। चूंकि अधिकांश व्यापार का मौका पश्चिमी यूरोप से मिलता है, इसलिए भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियां पूर्वी यूरोप का उपयोग "पश्चिमी यूरोपीय देशों की जरूरत पूरी करने के लिए वितरण स्थल" के रूप में करती हैं।[12] यह भी महसूस किया गया है कि पूर्वी यूरोप के पास बड़ी संख्या में इंजीनियरी प्रतिभाएं मौजूद हैं, इसलिए भारत की प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी (कंपनियां) भी इस मानव संसाधन का उपयोग करने में रुचि दिखलाएंगीं।[13]

भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) एक दूसरे को कई प्रस्ताव पेश कर सकते है। दोनों क्षेत्रों ने वैश्विक आर्थिक उथल-पुथल के बावजूद लचीले आर्थिक प्रदर्शन को बनाए रखा है। (यहाँ) हित तथा पारस्परिक लाभ और निर्भरता के कई संपूरक (क्षेत्र) मौजूद हैं। भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) दोनों क्षेत्रों की आर्थिक बुनियादें मजबूत बनी हुई हैं और बुनियादी सुविधा, विकास और विद्युत क्षेत्रों में तेजी से प्रगति हो रही है जिससे व्यापार के अवसर पैदा हो रहे हैं।[14] मैक्किंज़े ग्लोबल संस्थान की एक रिपोर्ट में उल्लेख किया गया कि मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों में "स्थिर वृहद-आर्थिक वातावरण, अत्यधिक शिक्षित लेकिन वहनीय कार्मिकशक्ति, अनुकूल व्यापार वातावरण और महत्वपूर्ण स्थल" मौजूद है; इसलिए, ये निवेश के लिए अधिक आकर्षक स्थल हैं।[15]

मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के व्यापार समूहों को भारत-यूरोपीय संघ आर्थिक संपर्कों में औपचारिक व्यवस्थाओं और तदर्थ पहलों के माध्यम से मजबूत बनने की आवश्यकता है। भारत-यूरोपीय संघ व्यापक व्यापार एवं निवेश करार (बीटीआईए) में वर्ष 2007 से अब तक 15 दौरों की वार्ता नहीं हो पाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष हरमन वान रोमपुई ने ब्रिस्बेन में एक बैठक में भारत-यूरोपीय संघ व्यापक व्यापार एवं निवेश करार (बीटीआईए) पर चर्चा की।[16] उन्होंने भारत-यूरोपीय संघ

मुक्त व्यापार समझौते पर (भी) चर्चा की, जिसमें आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को बढ़ाने की क्षमता है, और यूरोपीय संघ के भाग के रूप में, मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देश भारत और यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।[17] यूरोपीय संघ-13 के देश, जिन्हें व्यापक भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) से हानि की अपेक्षा लाभ अधिक है, वे संभवतः यूरोपीय संघ के भीतर एक संगठन बना कर इन वार्ताओं से शीघ्र निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए दबाव बना सकते हैं। इस क्षेत्र को अभी भी महत्वपूर्ण तुलनात्मक लाभ प्राप्त है, जैसे कि, भारत के आर्थिक सहयोग में बड़ी हिस्सेदारी प्राप्त करने के लिए कुशल और सस्ता श्रमिक वर्ग।

भारत और यूरोपीय संघ-13 के देश भी व्यापार, निवेश और लोगों के आवागमन में वृद्धि करने के लिए व्यापक रूप से मौजूदा क्षमता की जांच करने के लिए एक संयुक्त कार्य समूह या विशेष कार्य बल की स्थापना करने पर विचार कर सकते हैं। इस निकाय के गठन में मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों और भारत के आर्थिक सहयोग तथा व्यापार के लिए जिम्मेदार मंत्रालयों के उच्च स्तरीय प्रतिनिधियों को शामिल करना चाहिए। इससे सहयोग के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को सीमित किया जा सकता है और आर्थिक सहयोग सुदृढ़ करने के लिए नए तरीके और विचारों का प्रस्ताव किया जा सकता है। विभिन्न क्षेत्रों में नई पहल की संभावनाओं पर व्यापक रूप से चर्चा करने के लिए एक नियमित क्षेत्रीय भारत मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) आर्थिक मंच पर विचार किया जा सकता है। इस तरह का सबसे पहला मंच, भारत-मध्य यूरोप व्यापार शिखर सम्मेलन (आईसीईबीएस), नई दिल्ली में 25-27 मार्च, 2014 के दौरान आयोजित किया जा चुका है। इसे दोनों क्षेत्रों के व्यापारियों तथा नीति निर्माताओं की एक वार्षिक बैठक का रूप दिए जाने की योजना है।[18] अगर इसे ठीक तरह से प्रबंधित किया जाता है और यह कार्यान्वित किए जाने योग्य सिफारिशें प्रदान करने में सक्षम होता है तो यह आर्थिक सहभागिता बढ़ाने के लिए एक उपयोगी व्यवस्था साबित हो सकती है।

ऊर्जा, रक्षा, और बुनियादी सुविधाएं भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) देशों के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्र हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यूरोप की एक प्रमुख अर्थव्यवस्था, पोलैंड के पास रक्षा तथा ऊर्जा सहयोग के क्षेत्र में पेशकश करने के लिए बहुत कुछ है। कोयला, खनन और संबंधित प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में भारत-पोलैण्ड सहयोग की अपार संभावनाएं है। ऊर्जा-दक्षता, क्षमता निर्माण, अक्षय ऊर्जा आदि भी ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं, जिनमें भारत और पोलैण्ड अपने सहयोग का विस्तार कर सकते हैं। शीस्ट गैस में भी भारत-पोलैण्ड सहयोग उपयोगी हो सकता है। भारत में नई सरकार ने रक्षा के क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की ऊपरी सीमा बढ़ा दी है। भारत ने एक राष्ट्रीय विनिर्माण आधार के विकास पर भी जोर दिया है और नई सरकार ने बड़ी रक्षा परियोजनाओं को मंजूरी भी दे दी है। अतीत में भारत और पोलैंड के बीच रक्षा सहयोग (लागू) था। अत:, दोनों (देशों) के लिए आवश्यक होगा कि वे संयुक्त उद्यम, निवेश और प्रौद्योगिकी अंतरण

के माध्यम से इसमें उपलब्ध अवसरों का उपयोग करें।

लोगों के आपसी संपर्क – शैक्षिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक सहयोग

एक सहजीवी संबंध विकसित करने के लिए शैक्षिक आदान-प्रदान, सभ्य समाज के संपर्कों और लोगों के आपसी संपर्कों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। तुलनात्मक दृष्टि से, भारत में यूरोपीय संघ के साथ-साथ मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के बारे में जागरूकता अभी भी कम है। इसी प्रकार, मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों में भारत के बारे में जानकारी बहुत कम है। मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) क्षेत्र में दस हजार व्यक्तियों से भी कम प्रवासी भारतीयों का अपेक्षाकृत छोटा समाज है।[19] भारत में पूर्वी यूरोप और पूर्वी यूरोप में भारत की मीडिया कवरेज बहुत कम है। हालांकि, भारत और यूरोप विश्वविद्यालयों और शैक्षिक अनुसंधान संस्थानों के बीच संपर्कों का विस्तार कर रहे हैं, फिर भी, फार्मा(स्यूटिकल), कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, जलवायु परिवर्तन, अक्षय ऊर्जा और परिष्कृत प्रौद्योगिकी के मुद्दों पर भारतीय तथा यूरोपीय संघ अनुसंधान कार्यक्रमों को परस्पर जोड़ा जाना चाहिए। भारत-यूरोपीय संघ सहयोग का उद्देश्य वहनीय लागत पर उन्नत प्रौद्योगिकी विकसित करना होना चाहिए। दिनकर खुल्लर, तत्कालीन सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने भी विचार व्यक्त किया था कि भारत और मध्य यूरोपीय देश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, नई खोज और अनुसंधान एवं विकास पर परस्पर ध्यान केंद्रित करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं।[20] भारत मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों में अपनी संस्कृति को बढ़ावा देने के पहल कर रहा है, हालांकि इस पूरे क्षेत्र में भारत की छवि सुदृढ़ करने हेतु अधिक व्यवस्थित और नियमित गतिविधियों की और भी संभावनाएं मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त, इस पूरे क्षेत्र के विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं में भारत के सांस्कृतिक केन्द्रों तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) की पीठ की व्यवस्था एक उपयोगी पहल होगी। साथ ही, भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों को विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में सहयोग के लिए एक संयुक्त मंच तैयार करना चाहिए।

भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों को लोगों के अधिकाधिक आपसी संपर्कों को सुविधाजनक बनाने के लिए वीज़ा प्रतिबंधों को सहज बनाने पर गंभीर वार्ता भी करनी चाहिए। नई दिल्ली और क्षेत्रीय राजधानियों के बीच सीधी उड़ानों से यात्रा सुविधाजनक होने के साथ-साथ इन क्षेत्रों के महत्व को रेखांकित करने वाला एक प्रतीकात्मक संकेत भी जाएगा। पत्रकारों तथा मीडियाकर्मियों अथवा फिल्म निर्माताओं के बीच और अधिक सहयोग से भागीदारों के बारे में सामान्य जागरूकता बढ़ाने और रूढ़ प्रारूपों (स्टीरियोटाइप) से उबरने में सहायता मिलेगी। अंत में, इनके बीच समानता तथा अंतर समझाने में शिक्षाविदों और विशेषज्ञों को भी भूमिका निभानी होगी।

समापन टिप्पणी

आज, भारत और मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों के बीच बहुपक्षीय साझेदारी बढ़ाने की अधिकाधिक इच्छा

है। (ऐसे वातावरण में) संबंधों तथा आर्थिक एवं सामाजिक संपर्कों के विस्तार में दोनों पक्षों की तरफ से अतिसक्रिय नीति दृष्टिकोण महत्वपूर्ण होगा। भारत की यूरोपीय नीति को अतिसक्रिय बनाने की जरूरत है और इसे पूर्वी तथा पश्चिमी यूरोप के संदर्भ में उपयुक्त तरीके से संतुलित किया जाना चाहिए। जब भारत में नई सरकार बुनियादी ढ़ांचे के निर्माण, आर्थिक विकास को प्रोत्साहन और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक कूटनीति पर जोर दे रही है, तो मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) के देशों और यूरोपीय संघ के साथ भारत का संपर्क फिर से बहाल करने के लिए यह समय उपयुक्त प्रतीत होता है।

डा. दिनोज के. उपाध्याय विश्व मामलों की भारतीय परिषद, सप्रु हाउस, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।

पैट्रिक कुजीएल विश्व मामलों की पोलिस संस्थान, वारसा में वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता हैं।

समाप्ति नोट

[1] मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) की कोई सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है। इस लेख में, मध्य-पूर्वी यूरोप (CEE) उन 13 मध्य पूर्वी यूरोपीय देशों/राष्ट्रों का संदर्भ देता है, जो वर्ष 2004, 2007 और 2013 में यूरोपीय संघ में शामिल हो गए और जिनमें अनेक ऐतिहासिक तथा राजनीतिक समानताएं हैं। बालकन देश/राष्ट्र अथवा सोवियत-पश्चात के देश/राष्ट्र, जो यूरोपीय संघ (EU) में शामिल नहीं हुए हैं, वे लेखक के (इस) विश्लेषण में शामिल नहीं किए गए हैं।

[2] सोलाना, जेवियर। "यूरोपीय संघ और भारत", ब्रुकिंग्स, भारत-अमरीकी नीति ज्ञापन, सितंबर, 2014. http://www.brookings.edu/research/opinions/2014/09/23-european-union-india-solana (24 सितम्बर, 2014 को एक्सेस किया गया)

[3] ओलशेनी, ए. "भारत और परस्पर आर्थिक सहयोग परिषद (सीएमईए)" भाटिया, विनोद (सं.)) *भारत तथा समाजवादी विश्व: व्यापार तथा आर्थिक सहयोग में नए रूझान, (नई दिल्ली: पंचशील प्रकाशक, 1988),* पृ.20.

[4] मुखर्जी, रोहन और डेविड एम. मेलोन। "भारतीय विदेश नीति और समकालीन सुरक्षा चुनौतियां", *अंतरराष्ट्रीय मामले*, 2011, 87 (1), पृ. 89.

[5] सचदेवा, गुलशन। "भारत-यूरोपीय संघ आर्थिक संबंध: कार्यनीतिक भागीदारी *के मूल को मजबूत बनाना*", पेराल/पर्ल, लुइस और विजय सखुजा (सं.) *भारत-यूरोपीय संघ भागीदारी: कार्यनीतिक बनने* का सही समय, ईयूआईएसएस और वि. मा. की भा. परि., 2012.

[6] "यूरोस्टेट, आसान कोमेक्स्ट"। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार डाटासेट। http://epp.eurostat.ec.europa.eu/newxtweb/ (20 अक्तूबर, 2014 को एक्सेस किया गया)

[7] गोयल, तनु एम. और अर्पिता मुखर्जी। "पूर्वी यूरोप में भारतीय निवेश: संभावनाएं, मुद्दे और आगे की राह", *सीएआरआईएम-इंडिया आर आर 2012/18*, रॉबर्ट स्चुमन उन्नत अध्ययन केन्द्र, सैन डोमेनिको दी फिएसोल (एफआई), यूरोपीय विश्वविद्यालय संस्थान, 2012. http://cadmus.eui.eu/bitstream/handle/1814/24840/CARIM-India_RR2012-pdf?sequence=1 (5 नवंबर 2014 को एक्सेस किया गया)

[8] गोपालन, शशिधरन. "भारत-यूरोपीय संघ पर्यटन मानचित्र प्रवाह", सीएआरआईएम _ भारत-आरआर, 2013/15रॉबर्ट स्चुमैन उन्नत अध्ययन केन्द्र, सैन डोमेनिको द फिएसोल (एफआई): यूरोपीय विश्वविद्यालय संस्थान, 2013.

[9] भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा संसद के केन्द्रीय कक्ष, संसद भवन में अभिभाषण, नई दिल्ली, राष्ट्रपति सचिवालय 9 जून 2014, http://pib.nic.in/newsite/erelease.aspx?relid=105494 (5 नवम्बर, 2014 को एक्सेस किया गया)

[10] विश्व विकास संकेतक, विश्व बैंक, अंतिम अद्यतन: 17 अक्तूबर, 2014.

[11] पहला भारत-मध्य यूरोप व्यापार मंच, 27 और 28 मार्च, 2014, नई दिल्ली, परिणाम रिपोर्ट, फिक्की, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, 2014, पी। 15. http://www.ficci-indiace-businessforum.com/ (5 नवम्बर, 2014 को एक्सेस किया गया)

[12] नंदकुमार, इंदु और जोशेल मेंडोन्का "भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों की प्रतिभा, कैप्टिव के लिए पूर्वी यूरोपोन्मुखता" द इकोनॉमिक टाइम्स, 30 अप्रैल, 2014 http://articles.economictimes.indiatimes.com/2014-04-30/news/49523646_1_continental-europe-ulrich-meister-eastern-europe (5 नवम्बर, 2014 को एक्सेस किया गया)

[13] पूर्वोक्त

[14] पहला भारत-मध्य यूरोप व्यापार मंच, 27 और 28 मार्च, 2014, नई दिल्ली, परिणाम रिपोर्ट, फिक्की, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, 2014 http://www.ficci-indiace-businessforum.com/ (5 नवंबर 2014 को एक्सेस किया गया)

[15] मैक्किंज़े वैश्विक संस्थान "नई सुबह: मध्य और पूर्वी यूरोप में पुन:प्रज्वलित वृद्धि", दिसम्बर 2013 ttp://www.mckinsey.com/insights/economic_studies/a_new_dawn_reigniting_growth_in_central_and_eastern_europe (5 नवम्बर, 2014 को एक्सेस किया गया)

[16] अय्यर, पी वैद्यनाथन "इस बीच, वे यूरोपीय संघ से कहते हैं: परिवर्तन की बयार, अनुभव/जांच करें",इंडियन एक्सप्रेस, 15 नवम्बर, 2014. http://indianexpress.com/article/india/india-others/meanwhile-he-tells-eu-wind-of-change-test-it/(18 नवम्बर, 2014 को एक्सेस किया गया)

[17] सचदेवा, गुलशन। "आर्थिक संदर्भ में, यूरोपीय संघ का बहुत अधिक महत्व होना चाहिए", द हिन्दुस्तान टाइम्स, 26 अक्टूबर, 2014 । http://www.hindustantimes.com/comment/analysis/in-economic-terms-the-eu-should-matter-a-lot-more/article1-1279158.aspx (10 नवंबर 2014 को एक्सेस किया गया)

[18] विदेश मंत्रालय, भारत, *वार्षिक रिपोर्ट, 2013-2014*, नई दिल्ली, पृ. XIII.

[19] प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय, प्रवासी भारतीयों की संख्या, मई 2012 की स्थिति के अनुसार http://moia.gov.in/writereaddata/pdf/NRISPIOS-Data(15-06-12)new.pdf (10 नवंबर, 2014 को एक्सेस किया गया)

[20] फिक्की. "भारत-मध्य यूरोप व्यापार मंच की मेजबानी के लिए फिक्की-विदेश मंत्रालय में सहयोग", प्रेस विज्ञप्ति, 7 फरवरी, 2014. http://www.ficci-indiace-businessforum.com/PressRelease.pdf (5 नवंबर 2014 को एक्सेस किया गया)

***